श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2014

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 26 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 27 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
रविवार 28 जनवरी 2014	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 32 (वीर नि. संवत् - 2540) 365 अंक : 5

आयो रे बुढापो...

आयो रे बुढापो मानी, सुधि बुधि बिसरानी।।टेक।।
श्रवन की शक्ति घटी, चाल चालै अटपटी,
देह लटी, भूख घटी, लोचन झरत पानी।।
आयो रे बुढापो...।।1।।
दांतन की पंक्ति टूटी, हाड़न की संधि छूटी,
काया की नगरि लूटी, जात नहिं पहिचानी।।
आयो रे बुढापो...।।2।।
बालों ने वरन फेरा, रोगों ने शरीर घेरा,
पुत्रहू न आवे नेरा, औरों की कहा कहानी।।
आयो रे बुढापो...।।3।।
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करोगे कब,
यह गति ह्वै है जब, तब पछतै हैं प्राणी।।
आयो रे बुढापो...।।4।।

- कविवर पण्डित भूधरदासजी

छहढाला प्रवचन

25 दोषों से रहित सम्यग्दृष्टि

पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रूप को मद न ज्ञान को, धन-बल को मद भानै।।१३।।
तप को मद न मद जु प्रभुता को, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो यही दोष वसु, समकित को मल ठानै।।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष सेवक की नहीं प्रशंस उचरे है।
जिन-मुनि-जिनश्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हें न नमन करे है।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

धर्मात्मा को सम्यक्त्वपूर्वक आठ मद का अभाव हुआ है। जिसने स्वद्रव्य और परद्रव्य की अत्यन्त भिन्नता को जान लिया है, उसको परवस्तु द्वारा अपना बड़प्पन भासित नहीं होता। माता-पिता-शरीर-रूप-धन आदि जो वस्तुएँ मेरी हैं ही नहीं, उनके द्वारा मेरी महत्ता कैसी ? मेरी महत्ता तो मेरे सम्यक्त्वादि स्वभाव द्वारा ही है। सुन्दर शरीर और बाह्य बड़प्पन तो कई बार मिला, उसमें जिसे अपनी शोभा प्रतीत होती है, उसे चैतन्य से शोभायमान अपने आत्मा की प्रतीति नहीं है। देह, जाति, रूप, माता, पिता, धन, वैभव, उच्च पदवी - ये सब परद्रव्य हैं। इन सबसे अपने आत्मा को सर्वथा भिन्न अनुभव करने के बाद धर्मी को उन पदार्थों द्वारा अपना बड़प्पन कैसे भासित हो सकता है ? इसलिए उसके आठ मद नहीं होते। कोई विकल्प आ भी जाये, तो उसे मलिन जानकर वह भाव छोड़े और दोषरहित शुद्ध सम्यक्त्व की आराधना करे - ऐसा उपदेश है।

इसप्रकार सम्यग्दृष्टि को आठ शंकादि दोष तथा आठ मद नहीं होते; इसके अतिरिक्त उसे छह अनायतन और तीन मूढ़ता का भी सेवन नहीं होता। अरहन्त

परमात्मा ने जीव का जैसा स्वरूप बतलाया है तथा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप जो वीतरागमार्ग बतलाया है, उससे विपरीत कहने वाले कुदेव-कुगुरु-कुधर्म को धर्मी जीव सब प्रकार से छोड़ता है। किसी भी प्रकार उसकी अनुमोदना नहीं करता तथा कुदेव-कुगुरु-कुधर्म की सेवा करने वाले मिथ्यादृष्टि जीवों का साथ भी छोड़ देता है। धर्मबुद्धि से ऐसे जीव का साथ वह नहीं कर सकता तथा देव संबंधी अनेक मूढ़ताएँ, गुरु संबंधी अनेक मूढ़ताएँ तथा धर्म संबंधी अनेक मूढ़ताएँ लोगों में प्रचलित हैं; परन्तु धर्मी स्वप्न में भी उनका सेवन नहीं करता।

जो धर्म का स्थान नहीं, जिसके पास धर्म का सच्चा उपदेश नहीं, सम्यग्ज्ञान का स्वरूप जिसमें नहीं, अनेक प्रकार से जो विषय-कषाय एवं राग-द्वेष के पोषक हैं, जिनमें हिंसा-अहिंसा का भी विवेक नहीं - ऐसे कुदेव, कुगुरु, कुधर्म धर्म के अनायतन हैं। उनके सेवन से आत्मा का किंचित् मात्र हित नहीं होता, उनके सेवन से तो सम्यक्त्वादि का घात होता है और आत्मा का अत्यन्त अहित होता है। कुदेवादि का सेवन सम्यग्दृष्टि को तो होता ही नहीं; लेकिन जैन नाम धारण करने वाले जिज्ञासु को भी ऐसे कुदेवादि का सेवन नहीं होता। वीतरागमार्ग के देव-गुरु-धर्म और उनका सेवन करनेवाले साधर्मी-धर्मात्मा के अतिरिक्त दूसरे का सेवन अहित का कारण जानकर अत्यन्त छोड़ने योग्य है।

जिस सम्यग्दृष्टि महान अलौकिक आत्मा को अंतरस्वभाव की प्रतीति हुई है, उसे निश्चय सम्यक्त्व के साथ व्यवहार से पच्चीस दोषों का अभाव भी होता है। आजीविका छूट जाये, धन लुट जाये, देश को छोड़ना पड़े या प्राण जायें, तथापि सम्यग्दृष्टि जीव किसी भी प्रकार के भय से, आशा से, स्नेह से कुधर्म की या कुदेवादि की आराधना नहीं करता। वीतरागी देव-गुरु-धर्म का भक्त हिंसक देव-देवियों को नमन नहीं करता।

अहा, अरिहन्तदेव का उपासक तो चैतन्य के वीतरागमार्ग पर चलने वाला है, वह अन्य कुमार्ग का आदर क्यों करेगा ? वह कुमार्ग की या उसके सेवक की प्रशंसा नहीं करता, अनुमोदना नहीं करता। कुधर्म खूब फैला हुआ हो, अत:

अच्छा है, उसके भक्त अच्छे हैं; शास्त्र-मन्दिर अच्छे हैं - ऐसी प्रशंसा धर्मी नहीं करता। कुधर्म के सेवक कोई बड़ा मन्दिर बनवायें, लाखों रुपया खर्च करके विशाल यज्ञादिक उत्सव करें; वहाँ धर्मी उनकी प्रशंसा भी नहीं करता कि तुमने बहुत अच्छा कार्य किया है। अरे, वीतरागमार्ग से विरुद्ध ऐसा कुमार्ग, जो जगत् के जीवों का अहित करने वाला हो, उसकी प्रशंसा क्या ? जिसमें मिथ्यात्व का पोषण हो उन क्रियाओं को अच्छा कौन कहे ?

इसप्रकार कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का स्वयं तो सेवन करता ही नहीं, साथ ही दूसरे; जो सेवन करें, उनकी प्रशंसा भी नहीं करता; परन्तु संभव हो तो उन्हें उपदेश देकर कुमार्ग से छुड़ाता है। धर्मी गृहस्थ राजा को या माता-पिता आदि बड़ों को नमन करे, वह तो लोक व्यवहार है, उसके साथ कहीं धर्म का संबंध नहीं है, लेकिन धर्म के व्यवहार में वह कुदेव-कुगुरु को कभी नमन नहीं करता। यह बात तो उनके लिए है, जिन्हें सम्यग्दर्शनरूपी महारत्न लेना है, धर्म का सच्चा माल लेना है तथा जिन्होंने सम्यग्दर्शनरूपी रत्न प्राप्त कर लिया है, उन्हें उसको सँभालने की चिन्ता है। सम्यक्त्व में किंचित् भी अतिचार न लगे और शुद्धता हो, इसलिए पच्चीस दोष रहित और आठ गुण सहित सम्यक्त्व की आराधना करनी चाहिए। उसके द्वारा ही जीव का परम हित होता है।

भाई ! यह तो अपने हित के लिए सच्चे-झूठे का विवेक करने की बात है। सच क्या और झूठ क्या, इसकी जिसे खबर नहीं, वह क्या लेगा ? और क्या छोड़ेगा ? अपना हित किसप्रकार करेगा ? परीक्षा द्वारा सच्चे-झूठे को पहिचान कर निर्भयरूप से सत्य का स्वीकार करना चाहिए और असत्य का सेवन छोड़ना चाहिए। जगत् के साथ मेल रखने या जगत् को अच्छा दिखाने के लिए कभी भी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। यह तो अपनी श्रद्धा सच्ची करने की बात है।

वीतरागी देव-गुरु-धर्म का आदर और उससे विपरीत कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का त्याग तो सम्यक्त्व की पात्रतारूप प्रथम भूमिका में होना चाहिए। ''त्याग-विराग न चित्त में थाय न तेने ज्ञान'' - ऐसा श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा, उसमें कुदेवादि

का त्याग तो पहले ही समझ लेना चाहिए। दूसरे तो अनेक प्रकार के त्याग किए; परन्तु कुदेव-कुगुरु के सेवन का त्याग न करे तो उसका रंचमात्र भी हित नहीं होता और जहाँ राग को धर्म माना, वहाँ वैराग्य कहाँ रहा ? अरे, देह से भिन्न मेरा अखण्ड चैतन्यतत्त्व क्या है और उसका अनुभव कैसा है? जो उसका सच्चा स्वरूप बतलाने वाले वीतराग सर्वज्ञदेव, रत्नत्रयवन्त गुरु और रागरहित धर्म व शास्त्र को पहिचाने, वह जीव उससे विरुद्ध अन्य किसी को मानता नहीं, नमन नहीं करता और प्रशंसा नहीं करता।

एक ओर कुन्दकुन्दाचार्य जैसे वीतरागी सन्तों का भक्त कहलाये तथा दूसरी ओर उनसे विरुद्ध कहने वालों का आदर तथा श्रद्धा करे तो उसे सत्य का विवेक कहाँ रहा ? भाई ! वीतरागमार्ग के और वीतरागी सन्तों के विरोधी ऐसे कुगुरु के सेवन में तो मिथ्यात्व की पुष्टि तथा तीव्र कषाय के द्वारा आत्मा का बहुत अहित होता है, जिससे उसका निषेध करते हैं। इसमें किसी व्यक्ति के विरुद्ध द्वेष नहीं है; अपितु जीवों की हितबुद्धि ही है। अपनी श्रद्धा स्वच्छ रहे, उसमें दोष न लगे, उसकी बात है। सत्यमार्ग से विरुद्ध विकल्प धर्मी कभी आने नहीं देता। मिथ्यात्व-संबंधी दोषों से बचने और सम्यक्त्व की शुद्धि बनाये रखने के लिए नि:शंकितादि आठ अंग आदरणीय हैं।

इसप्रकार सम्यक्त्व संबंधी गुण-दोष को पहिचान कर अपने हित के लिए नि:शंकितादि आठ गुणसहित, शंकादिक पच्चीस दोषरहित शुद्ध सम्यक्त्व को धारण करो - ऐसा उपदेश है। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के कार्यक्रम

अब डॉक्टर भारिल्ल अधिकांश जयपुर में ही रहेंगे। उनके प्रवचन प्रतिदिन शाम को पौने आठ बजे से होंगे; जिन्हें लाइव www.ustream.tv/channel/ptst पर प्रसारित किया जायेगा। आप सभी स्मारक भवन में पधारकर या घर बैठे इन्टरनेट पर अवश्य सुनें। प्रात:काल : जी-जागरण चेनल पर 6.30 से 7 बजे तक भी उन्हें सुना जा सकता है।

- व्यवस्थापक : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 49वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

एदे सव्वे भावा ववहारणयं पहुच्च भणिदा हु।
सव्वे सिद्धसहावा सुद्धणया संसिदी जीवा।।४९।।

(हरिगीत)

व्यवहारनय से कहे हैं ये भाव सब इस जीव के।
पर शुद्धनय से सिद्धसम हैं जीव संसारी सभी।।४९।।

ये सब भाव वास्तव में व्यवहार नय का आश्रय करके, (संसारी जीवों में विद्यमान) कहे गये हैं; शुद्धनय से संसार में रहने वाले सर्वजीव सिद्ध स्वभावी हैं।

(गतांक से आगे ...)

जो जीव अपनी पर्याय में रहनेवाले राग-द्वेष का और अपूर्णता का यथार्थ ज्ञान नहीं करते, उन्हें शुद्धात्मद्रव्य का ज्ञान भी सच्चा नहीं हो सकता।

यहाँ निश्चयनय और व्यवहारनय की उपादेयता का कथन है। प्रमाणभूतज्ञान में शुद्धात्मद्रव्य तथा उसकी पर्यायों का सम्यक्ज्ञान होना चाहिए। अपने में कथंचित् विभाव पर्यायें विद्यमान हैं - जिसे ऐसा स्वीकार ही न हो, उसे शुद्धात्मद्रव्य का भी सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। आत्मा द्रव्यदृष्टि से शुद्ध है - यह बात ठीक है; फिर भी एकसमय का राग पर्याय में बिलकुल है ही नहीं अथवा पर्याय में भी पूर्णता वर्त्त रही है - ऐसा माने तो पर्याय का सच्चा ज्ञान भी नहीं है और ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण द्रव्य का प्रमाणज्ञान नहीं होता। स्वभावदृष्टि से कहा जाता है कि वस्तुस्वभाव में त्याग-अत्याग है ही नहीं; परन्तु इस कथन से ऐसा मान बैठे कि पर्याय में भी मुनिपना या वीतरागीपना है तो भ्रम है। बनारसीदासजी तथा उनके मित्रों ने भी

सच्ची समझ के पहिले ऐसा माना था और वस्त्र उतार कर मुनिदशा होना मान लिया था। यह बात 'अर्द्धकथानक' में उन्होंने स्वयं लिखी हैं। जो कि इसप्रकार हैं :-

करनी को रस मिट गयो, भयो न आतम स्वाद।
भई बनारसी की दशा, जथा ऊँट को पाद।।

अपनी भूमिकानुसार पर्याय को समझे बिना अज्ञानी भ्रमित हो जाता है। अतः भूमिका में वर्तती पर्याय का ज्ञान अवश्य करना चाहिये; पर्याय का विवेक करके उसमें कैसा-कैसा राग वर्तता है उसका ज्ञान आवश्यक है और उसे कहनेवाला व्यवहारनय है। जो जीव पर्याय का ज्ञान यथार्थ नहीं करते उनका आत्मा का ज्ञान भी यथार्थ नहीं। इसलिये व्यवहारनय के विषयों का भी ज्ञान तो ग्रहण करने योग्य है - ऐसी विवक्षा से ही यहाँ व्यवहारनय को उपादेय कहा है।

जो जीव राग-द्वेष का ज्ञान करके उसका आश्रय छोड़कर शुद्धद्रव्य का आश्रय करते हैं, उनका ज्ञान प्रमाण है।

व्यवहारनय का विषय राग, पुण्य अथवा पर्याय की अपूर्णता है, उसका आश्रय ग्रहण करने योग्य है - ऐसी विवक्षा से व्यवहारनय को उपादेय नहीं कहा। विकार, हीनदशा, क्षयोपशमादि का ज्ञान करने से आगे बढ़ेंगे अथवा लाभ होगा - ऐसा है ही नहीं। व्यवहारनय के विषय का आश्रय छोड़ने योग्य ही है - ऐसा समझाने के लिए ५०वीं गाथा में व्यवहारनय को स्पष्ट हेय कहा जायेगा।

जिस जीव के अभिप्राय में अपने शुद्धात्मा का आश्रय वर्तता है तथा निमित्त का, पुण्य-पाप का अथवा अपूर्ण पर्याय का आश्रय नहीं वर्तता (ज्ञान वर्तता है); उसी जीव के द्रव्य-पर्याय का ज्ञान सम्यक् है - ऐसा समझना। जिसने पुण्य, पाप, विकार, अपूर्ण पर्याय को हेय मानकर शुद्धकारणपरमात्मा को उपादेय माना है, उसका ज्ञान सम्यक्प्रमाण है - अन्य का नहीं।

संसारीजीव व्यवहारनय से शरीर के सम्बन्ध वाला है, विनाशीक है, अशुद्ध है और इन्द्रिय तथा कर्म के सम्बन्ध वाला है।

पहले, जो विभाव पर्यायें 'विद्यमान नहीं हैं' ऐसा प्रतिपादन किया है, वे सब विभाव पर्यायें वास्तव में व्यवहारनय के कथन से विद्यमान हैं। गाथा ४८ में संसारीजीवों को सिद्धसमान कहा था, वहाँ विभाव पर्यायें विद्यमान नहीं हैं - ऐसा

कहा था, वे सब विभाव पर्यायें व्यवहारनय से एकसमयवर्ती हैं, उनका सर्वथा अभाव नहीं है, वहाँ तो द्रव्यदृष्टि से स्वरूप बताया था। इस आधार से एक समय जितना भी विकार नहीं है - ऐसा कोई मान बैठे तो वस्तु का विरोध हो जायेगा।

वस्तु दृष्टि से जिसका निषेध किया था, वह व्यवहार से एक समय जितना है।

(१) त्रिकालीदृष्टि से संसारीजीव को अशरीरी कहा था, वही जीव व्यवहारनय से शरीर के सम्बन्ध वाला है।

(२) त्रिकालीदृष्टि से संसारीजीव को अविनाशी कहा था, वही जीव व्यवहारनय से विनाशीक है। नर-नारकादि पर्यायों का ग्रहण-त्याग उसके होता है।

(३) स्वभावदृष्टि से संसारीजीव को अतीन्द्रिय कहा था, वही जीव व्यवहारनय से शरीर वाला है और ज्ञान में इन्द्रियों के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध वाला है।

(४) स्वभावदृष्टि से संसारीजीव को निर्मल कहा था, वही जीव व्यवहारनय से क्षयोपशमादि विभावभाव के कारण मैल वाला है।

(५) स्वभावदृष्टि से संसारीजीव को विशुद्धात्मा कहा था, वही जीव व्यवहारनय से अशुद्ध है, राग-द्वेषरूपी भावकर्मों को निमित्तरूप से द्रव्यकर्मों के सम्बन्ध वाला है।

एक समय जितना पर्याय में विकार है, कमी है, और कर्म तथा शरीर के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध भी है। यदि व्यवहार से भी शुद्ध और अतीन्द्रिय मान ले तो वस्तु-विरोध हो जायेगा, इसलिए एकसमयवर्ती पर्याय में व्यवहार से ऐसा विकार और कर्म के साथ सम्बन्ध है - ऐसा ज्ञान करना उचित है। जो पर्याय में विकार है उसका द्रव्य अपेक्षा से निषेध है। यदि विकार का सर्वथा अभाव ही हो तो निषेध करना रहता नहीं। अतः व्यवहार का ज्ञान करने जैसा है - परन्तु आदर करने योग्य नहीं।

पुनः जो (व्यवहारनय के कथन से) चार विभावरूप परिणत होने से संसार में भी रहते हैं, वे सभी शुद्धनय के कथन से शुद्ध गुण-पर्यायों से सिद्धभगवान समान हैं अर्थात् जो जीव व्यवहारनय के कथन से औदयिकादि विभावभावों वाले होने से संसारी हैं, वे सब शुद्धनय के कथन से शुद्धगुण और शुद्धपर्याय वाले होने से सिद्ध सदृश हैं। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : श्रद्धान के दोष और चारित्र के दोष में क्या अन्तर है ?

उत्तर : श्रद्धान के दोष और चारित्र के दोष में महान अन्तर है। सम्यग्दृष्टि दो भाई युद्ध करें, जीवों की हिंसा हो, तथापि इस शरीर की क्रिया का और राग का कर्त्ता उनमें से एक भी नहीं, दोनों ज्ञाता ही हैं और मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी एकेन्द्रियजीव का भी घात करे नहीं, तथापि वह काया और कषाय में एकत्वबुद्धि वाला होने से कर्त्ता है, षट्काय का घातक है। अहाहा ! चारित्र के दोष की अल्पता कितनी कि दो भाई लड़ें तो भी मोक्ष जावें और श्रद्धान के दोष की महानता इतनी कि विपरीत परिणमन के फल में नर्क-निगोद जावें। मूल आत्मदर्शन बिना चाहे जितनी साधुपने की क्रिया करे, किन्तु सभी व्यर्थ है। छह माह के उपवास करे, त्याग करे, फिर भी आत्मज्ञान बिना वह सब शून्य है, रण में पोक समान है। भाई ! प्रभु का मार्ग अत्यंत निराला अन्तर का है, इसके समझने में बहुत प्रयत्न चाहिए।

प्रश्न : श्रद्धा के दोष और चारित्र के दोष के फलों में क्या अन्तर है ?

उत्तर : जिनेन्द्रकथित वस्तुस्वरूप की श्रद्धा से जो भ्रष्ट है, उसकी मुक्ति नहीं होती। चारित्र से जो भ्रष्ट हो गया है, उसकी मुक्ति हो जाती है। इसका कारण यह है कि उसे जो चारित्र सम्बन्धी दोष है, उसका उसे बराबर ध्यान है, अतः वह उसका अभाव करके मुक्ति प्राप्त कर लेता है। जो जीव भगवान के द्वारा प्रतिपादित वस्तुस्वरूप की श्रद्धा से भ्रष्ट है, उसकी मुक्ति नहीं होती। चारित्रदोष के सद्भाव में भी किसी सम्यग्दृष्टि को तीर्थंकर गोत्र का बन्ध प्रतिसमय हो रहा है, यह सम्यग्दृष्टि निकट भविष्य में ही चारित्र का दोष टालकर मोक्षलक्ष्मी का स्वामी होगा।

प्रश्न : जिनशासन और जैनधर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिस श्रुतज्ञान की वीतरागी पर्याय में आत्मा अबद्धस्पृष्ट स्वरूप अनुभव में आवे, उस पर्याय को जिनशासन कहते हैं। जिसमें विकार, अपूर्णता या

भेद आवे; उस पर्याय को जिनशासन नहीं कहते। पाँचभावस्वरूप होने पर भी एकरूप आत्मा है, वह जिसके अनुभव में आवे, उसको वीतरागी जैनधर्म कहते हैं। वीतरागी पर्याय प्रकट होती है, वीतरागी द्रव्य का आश्रय है, तथापि कर्त्तापना उस वीतरागी द्रव्य का नहीं है। वीतरागी पर्याय को वीतरागी द्रव्य का आश्रय आया - इसलिए उस पर्याय को पराधीन मत मान लेना। वह वीतरागी पर्याय षट्कारक से स्वतंत्र कर्त्तारूप में होकर प्रकट हुई है। अपनी धर्म पर्याय है, उसका कर्त्ता भी द्रव्य - ध्रुववस्तु उपचार से है। अहाहा ! ऐसी बातें वीतराग की हैं। ये तो अन्दर से आती है, भगवान के पास से आती हैं, अनन्त केवलियों की पुकार है।

प्रश्न : साधक की अन्तरंग दशा कैसी होती है ?

उत्तर : साधक जीव को एक विकल्प से जो पुण्य बँधता है, वह पुण्य भी जगत को विस्मय उत्पन्न करता है, तो फिर उसकी निर्विकल्प साधक भावना की तो बात ही क्या ? अहा ! साधक भाव के एक अंश की ही ऐसी अचिन्त्य महिमा है कि तीर्थंकर प्रकृति का पुण्य भी उसको नहीं पहुँच सकता। तीर्थंकर प्रकृति तो विभाव का फल है और साधक भाव है स्वभाव का फल - दोनों की जाति ही भिन्न है। साधक को चैतन्य की साधना के लिए जगत में सब कुछ अनुकूल है - उसको कहीं प्रतिकूलता है ही नहीं; क्योकि उसकी साधना निजात्मा के आधार से है, बाहर के आधार से नहीं; साधक तो प्रतिकूलता के प्रसंग को भी धर्मभावना की तीव्रता का तथा जिनभक्ति - आत्मसाधना आदि की उत्कृष्टता का कारण बना लेता है।

प्रश्न : ज्ञानी को राग तो होता है, फिर भी उसे वैरागी क्यों कहते हैं?

उत्तर : प्रथम तो ज्ञानी को परमार्थ से राग होता ही नहीं; क्योंकि राग के समय ज्ञानी जानता है कि मैं तो ज्ञान हूँ, मेरा आत्मा ज्ञानमय है - रागमय नहीं है, राग मेरे ज्ञान से भिन्न है। इसके अतिरिक्त ज्ञानी को उस राग की रुचि नहीं है। राग मुझे हितकर है - ऐसा ज्ञानी नहीं मानता। स्वभावसन्मुख-दृष्टि उस समय भी छूटी नहीं है और राग में एकत्वबुद्धि हुई नहीं है; इसलिये ज्ञानी वास्तव में वैरागी ही है। अज्ञानी तो अकेले राग को ही देखता है; परन्तु उसी समय ज्ञानी का ज्ञान उस राग से भिन्न पड़कर अन्तरस्वभाव में एकाकारपने परिणम रहा है, उसे अज्ञानी नहीं पहचानता।

समाचार दर्शन -

महावीर निर्वाणोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महावीर निर्वाणोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: 7 बजे से भगवान महावीर पूजन के उपरान्त 8 बजे पंचतीर्थ जिनालय एवं 8.15 बजे सीमंधर जिनालय में निर्वाण फल समर्पित किया गया। तदुपरान्त प्रात: 8.30 बजे से पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव पर विशेष प्रवचन का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। इसके बाद गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुआ।

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इन्दौर के तत्त्वावधान में दिनांक 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक पंचकल्याणक विधान संपन्न हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल व ब्र. अमृतभाई देवलाली द्वारा संपन्न हुये।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के 204-206 कलश व 345-348 तक की गाथाओं पर अत्यंत प्रभावशाली प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' द्वारा नियमसार पर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा अष्टपाहुड पर प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर लगभग 800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

(3) दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में दिनांक 16 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक पण्डित गुलाबचंदजी बीना द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही दिनांक 3 व 4 नवम्बर को भगवान महावीरस्वामी का 2540वाँ निर्वाण महोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पण्डित अनिलजी इंजीनियर द्वारा समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(4) सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ तलहटी में स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। पूजन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं कु. विपाशा जैन उदयपुर द्वारा संपन्न कराई गई।

कार्यक्रम में पण्डित राजकुमारजी द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर प्रात: महावीर पंचकल्याणक विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर रात्रि में **'भगवान महावीर और उनके सिद्धांत'** विषय पर गोष्ठी एवं **'महावीर का वैराग्य'** विषय पर नाटिका का आयोजन किया गया। गोष्ठी के प्रमुख वक्ताओं में पण्डित अरुणजी मोदी, पण्डित विपुलजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, कु .अनु शास्त्री आदि शास्त्री विद्वानों तथा ममता, संयम, प्रिंस, शशांक आदि वक्ताओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

सभी कार्यक्रमों का संचालन पण्डित निकलेशजी शास्त्री ने किया।

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 10 से 17 नवम्बर 2013 तक **श्री सुरेशचन्द अजीतकुमार वैभवकुमार तोतूका परिवार, जयपुर** की ओर से आयोजित श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान बहुत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की गाथा 349 से 365 तक एवं रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त रात्रि में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा नयचक्र (ज्ञाननय, शब्दनय, अर्थनय) पर कक्षाओं का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन किया गया।

विधान के अवसर पर बीच-बीच में अनेक छंदों का अर्थ पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा समझाया गया। कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों सहित लगभग 350-400 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधान के अंतिम दिन मंगल कलश भव्य शोभायात्रापूर्वक विधानकर्त्ता परिवार के घर पर ले जाया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर व पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर के सहयोग से संपन्न कराये। कार्यक्रम का निर्देशन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें दिनांक 26, 27 व 28 जनवरी 2014 को आयोजित की जावेगी।

जिन परीक्षा केन्द्रों ने छात्र प्रवेशफार्म भरकर अभी तक नहीं भेजे हैं, वे तत्काल परीक्षाबोर्ड कार्यालय को भेज देवें। **- ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक-परीक्षा विभाग)**

शिलान्यास महोत्सव संपन्न

(1) सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन ब्रह्मचारी, वृद्धाश्रम ट्रस्ट द्वारा बनाये जा रहे मुमुक्षु निवास साधना केन्द्र का दिनांक 17 व 18 अक्टूबर 2013 को पंचपरमेष्ठी विधानपूर्वक शिलान्यास महोत्सव संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिलान्यास कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मुकेशजी जैन सुपुत्र स्व. श्री विनोदचन्दजी सर्राफ ग्वालियर ने एवं ध्वजारोहण श्री चक्रेशकुमार राजेशकुमार जैन मैसर्स बाबूलाल चक्रेशकुमार अशोकनगर ने किया।

भूमिशुद्धि कलश विराजमानकर्त्ता श्रीमती बबीता जैन धर्मपत्नी मुकेशजी जैन ग्वालियर, श्री इन्द्रसेन जैन भिण्ड एवं श्रीमती अर्चना नरेश जैन ग्वालियर थे।

इस मुमुक्षु निवास साधना केन्द्र में आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन, ब्रह्मचारी मुमुक्षु निवास, श्रावक मुमुक्षु निवास, शुद्ध आहारशाला एवं औषधालय का निर्माण प्रस्तावित है। पंचपरमेष्ठी विधान के मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्रीमती बीना धर्मपत्नी पदमचन्दजी सर्राफ मुरार-ग्वालियर थे।

विधि विधान के समस्त कार्य ब्र. महेन्द्रजी इन्दौर एवं ब्र. नन्हे भैया सागर द्वारा संपन्न कराये गये। संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के निर्देशन में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन श्री कौशलकिशोरजी जैन भिण्ड ने एवं आभार प्रदर्शन श्री चन्दूभाई बांसवाड़ा ने किया।

(2) कोटा (राज.) : यहाँ इन्द्रविहार स्थित सीमंधर जिनालय में पाठशाला भवन का शिलान्यास समारोह पंचबालयति विधानपूर्वक दिनांक 11 से 13 अक्टूबर तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 11 अक्टूबर को आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'अनेकान्त व स्याद्वाद' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी एवं मुख्य अतिथि डॉ. आर.के. जैन विदिशा थे। कार्यक्रम में श्री प्रेमचन्दजी बजाज, पण्डित रतनचंदजी चौधरी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा भी उपस्थित थे। सभा का संचालन अभिनय शास्त्री (शास्त्री अन्तिम वर्ष) ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने किया।

दिनांक 12 अक्टूबर को पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न कराये गये।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2013 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) –
1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-3

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर) –
1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)–
1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)–
1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)–
1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 10 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

जिन चैत्यालय एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि. जैन मुमुक्षु ट्रस्ट, नेमिनाथ जैन कॉलोनी के तत्त्वावधान में श्री शांतिनाथ दि. जिन चैत्यालय एवं आचार्य कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का निर्माण कराया जा रहा है, जिसका शिलान्यास समारोह दिनांक 31 अक्टूबर को डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा कराया गया।

इस अवसर पर डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **'जिनमंदिर व स्वाध्याय भवन की महत्ता'** विषय पर प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का शुभारंभ जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा से हुआ। तत्पश्चात् ध्वजारोहण, पूजन, प्रवचन, समारोह सभा व शिलान्यास के कार्यक्रम हुये।

वेदी का शिलान्यास श्री भंवरलालजी एवं शांतिलालजी अखावत परिवार द्वारा एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री महावीरजी कुणावत परिवार अहमदाबाद, श्री रंगलालजी मेहता परिवार, श्री झमकलालजी जैन परिवार लकडवास व श्री मांगीलालजी अखावत अहमदाबाद द्वारा किया गया। **– शान्तिलाल अखावत**

पंच परमेष्ठी विधान संपन्न

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ दिनांक 2 से 6 नवम्बर तक श्री कीर्तिभाई चिमनलाल शाह परिवार की ओर से पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् अहमदाबाद के सदस्य पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री, पण्डित उदयमणीजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री 'स्वानुभव', पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित चेतनजी शास्त्री के संयोजन में संपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता, फतेहपुर भी उपस्थित रहे। पण्डित सचिनजी शास्त्री के निर्देशन में श्री पंचपरमेष्ठी विधान संपन्न कराया गया।

इस अवसर पर दोपहर में पण्डित सोनूजी शास्त्री 'स्वानुभव' द्वारा प्रात: एवं रात्रि में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री द्वारा पंचपरमेष्ठी के स्वरूप से संबंधित विभिन्न विषयों पर विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

प्रात: एवं रात्रिकालीन सभा में प्रतिदिन पण्डित उदयमणीजी शास्त्री, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री, पण्डित रीतेशजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर द्वारा पंच परमेष्ठी के सामान्य स्वरूप एवं प्रयोजन सिद्धि जैसे विषयों पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

चैतन्यधाम प्रमुख अमृतभाई मेहता, श्री अनिलभाई गांधी तलोद, श्री अजितभाई मेहता नवरंगपुरा एवं श्री बीनूभाई शाह मुम्बई ने अहमदाबाद स्नातक परिषद द्वारा आयाजित इस कार्यक्रम की खूब सराहना की।

समग्र कार्यक्रम का कुशल निर्देशन एवं संचालन पण्डित ऋषभजी शास्त्री द्वारा किया गया। सभी प्रवचन एवं कक्षाओं के पश्चात पण्डित नितिनजी शास्त्री ने प्रश्नोत्तरी का संचालन किया।

वार्डन की आवश्यकता

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा सोनगढ (गुज.) में संचालित विद्यालय में विद्यार्थियों की देखभाल एवं शिक्षण कार्य हेतु एक योग्य वार्डन की आवश्यकता है। 30 वर्ष से अधिक उम्र वालों को प्राथमिकता, वेतन-योग्यतानुसार।

संपर्क करें – मंत्री, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्ण कुंज, प्लाट नं. 30, नवयुग सी.एच.एस. लिमिटेड, बी.एल. मेहता मार्ग, विले पार्ले (वेस्ट), मुम्बई-400056 फोन - 022-26130820

आमंत्रण पत्रिका विमोचन संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ जैन नगर में आगामी दिनांक 21 से 28 नवम्बर तक लगने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं 170 तीर्थंकर महामंडल विधान की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन दिनांक 6 नवम्बर को अतिशय क्षेत्र श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण में किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रकुमार जैन रेमजा वालों ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सेठ महावीर प्रसादजी (अध्यक्ष- सेठ छदामी लाल जैन ट्रस्ट) एवं विशिष्ट अतिथि श्री जितेन्द्रकुमारजी 'मुन्नाबाबू' व पण्डित विमलकुमारजी जलेसर उपस्थित थे। आमंत्रण पत्रिका का विमोचन डॉ. अरिन्जयजी जैन आगरा पुत्र डॉ. अरविन्दकुमारजी करहल द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे स्थानीय विद्वान प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशजी ने शिविर की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहा कि ''वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिविरों की बाढ आने का श्रेय कानजीस्वामी को है एवं वर्तमान में विद्वानों को तैयार करने का जो कार्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है, वह बहुत प्रशंसनीय है।''

मंगलाचरण श्रीमती इन्द्राणी जैन ने एवं संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर ने किया।

पंचकल्याणक में पधारने हेतु आमंत्रण

श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, जबेरा द्वारा नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर के **दिनांक 14 से 19 दिसम्बर 2013 तक** होने जा रहे श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी साधर्मी भाई-बहिन सादर आमंत्रित हैं। आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें। **संपर्क सूत्र -** पण्डित कमल मलैया (कार्याध्यक्ष) 8878730884, पण्डित विनोद सिंघई (महामंत्री) 9424462669, पण्डित सुरेन्द्र मलैया (संयोजक) 9425629043

ऑनलाइन व्याख्यान

दिनांक 9 नवम्बर को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा महावीर निर्वाणोत्सव विषय पर मोना **(MONA-Mumukshu of North America)** के तत्त्वावधान में अमेरिका व कनाडा के साधर्मियों हेतु प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि कॉन्फ्रेन्स पर आपके प्रवचन विगत 3 वर्षों से चल रहे हैं, जिसमें गुणस्थान विवेचन की पूर्णता के उपरान्त वर्तमान में तत्त्वार्थ राजवार्तिक एवं इष्टोपदेश पर प्रवचन किये जा रहे हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com